Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 2, Issue 1- 2017

राजस्थान की मुक्त विद्यालयीन शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्याएँ

वन्दना गोस्वामी*, अनुराधा पालीवाल*

शोध सार (Abstract)

राजस्थान में राष्ट्रीय व राज्य मुक्त विद्यालयी संस्थानों में विद्यार्थी अध्ययनरत है। विद्यार्थी मुक्त शिक्षा में अपने अध्ययन को जारी रखते हुए मुक्त शिक्षा में संलग्न रहते हैं। इस दौरान अध्ययन हेतु विभिन्न कार्यों के लिए उन्हें निर्देशन व विषय वस्तु सामग्री की आवश्यकता भी होती है। माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ये विद्यार्थी मुक्त शिक्षा के विभिन्न पक्षों की विशेषताओं का लाभ तो ले ही रहे हैं साथ ही अनेक कठिनाइयों को भी अनुभव करते होंगे। कुछ ने सत्र के दौरान, कुछ नव प्रवेश वाले विद्यार्थी मुक्त शिक्षा के पक्षों में समस्या को अनुभूत कर रहे हैं। शोध द्वारा इन विद्यार्थियों के विचारों व अनुभव को जानने का प्रयास किया गया है। अतः यह अध्ययन मुक्त शिक्षा के पक्षों में विद्यार्थियों के स्वअनुभवों व प्रत्यक्षीकरण पर आधारित है।

सम्प्रत्ययात्मक पृष्ठभूमि

मुक्त विद्यालय प्रारम्भ करने का विचार 1974 में आया। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के तात्कालिक निदेशक प्रो. रईस अहमद ने एक कार्यकारी समूह स्थापित किया और समूह में यह सिफारिश की, कि 14+ आयु वर्ग के बालक और प्रौढ़ों के लिए मुक्त विद्यालय स्थापित करना वांछनीय होगा। यह विचार 1974 में प्रारम्भ हुआ था तथा 1979 में जाकर परिपक्व हुआ। इसे 1983 तक पूरी तरह अपना लिया गया। विद्यालयी स्तर पर 23 नवम्बर, 1989 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा एक स्वायत्तशाशी संस्था के रूप में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय की स्थापना की गई। राष्ट्रीय खुला विद्यालय (NOS) की स्थापना राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 के आधार पर हुई। इसके द्वारा परीक्षा प्रथम बार 1991 में ली गई। प्रारम्भ में इसे राष्ट्रीय खुला विद्यालय (NOS) नाम दिया गया, किन्तु सन् 2002–03 में इसका नामांतरण राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (NIOS) के रूप में किया गया।

राष्ट्रीय स्तर पर NIOS की तरह राजस्थान में राज्य स्तर पर भी मुक्त विद्यालय (RSOS) प्रारम्भ किए गए। शैक्षिक दृष्टि से बीमारू कहे जाने वाले प्रदेश की श्रेणी से बाहरी आये राजस्थान राज्य की अपनी गौरवपूर्ण ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है वहीं दूसरी ओर अनेक प्रकार की सामाजिक कुरीतियों का चलन आज भी इस राज्य के अधिकांश भागों में व्याप्त है।

*एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली, राजस्थान।
*प्रवक्ता, आर्य महिला शिक्षक, प्रशिक्षण महाविद्यालय, मालवीय नगर, अलवर।
Correspondence to: डॉ. अनुराधा पालीवाल, प्रवक्ता, आर्य महिला शिक्षक, प्रशिक्षण महाविद्यालय, मालवीय नगर, अलवर।
E-mail Id: anuradhapaliwal72@gmail.com

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

यहां की भौगोलिक स्थिति पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण में इतनी भिन्नता लिए हैं कि इसका प्रभाव जहाँ एक ओर लोगों के जनजीवन पर पड़ता है वहीं दूसरी ओर यह शिक्षा के विस्तार और विकास को भी प्रभावित करता है। राज्य के पहाड़ी, मरूस्थलीय व पठारी क्षेत्रों में अनेक ऐसे गांव है जहां राजस्थान सरकार शिक्षा स्तर को ऊंचा करने के लिए अथक प्रयास कर रही है।

क्षेत्र विशेष की ऐसी विषम परिस्थितियां विद्यार्थियों के समक्ष होती है जिनके रहते हुए वे मुक्त विद्यालय से शिक्षा प्राप्त करते हैं। औपचारिक शिक्षा से वंचित वर्ग को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़कर एक सुसंस्कृत व शिक्षित समाज का निर्माण करने के लिए ग्रामीण बालक–बालिकाओं, युवक–युवतियों को माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा से लाभान्वित करवाने के उद्देश्य को लेकर राजस्थान में पहली बार एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल (RSOS) की स्थापना दिनांक 21.03.05 को की गई। राजस्थान में मुक्त विद्यालय के रूप में राजस्थान राज्य मुक्त विद्यालयी संस्थान में इन विद्यार्थियों को अध्ययन जारी रखने का सुअवसर प्रदान किया है।

मुक्त विद्यालयी शिक्षा में विद्यार्थियों की संख्या सतत् रूप से बढ़ती जा रही है। जहां संख्या बढ़ती है वहां हमेशा गुणवत्ता में कमी का खतरा बना रहता है जो कि शिक्षा क्षेत्र में किसी भी कीमत पर स्वीकार्य नहीं होगा फिर भी संस्थागत कार्यों को सही योजनाबद्ध तरीके से किया जाए, ऐसा प्रयास किया जाता है और शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाया जाता है। राजस्थान में राष्ट्रीय व राज्य मुक्त विद्यालयी संस्थानों (NIOS व RSOS) में प्रवेश प्रक्रिया व शुल्क संबंधी निर्देशों में लचीलापन होने के बावजूद क्या विद्यार्थी को किन्हीं समस्याओं से रूबरू होना पड़ता है?

मुक्त विद्यालयों (NIOS व RSOS) में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए मुख्य साधन उनकी अध्ययन सामग्री है जिससे वे विषय एवं विषय वस्तु का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। उनकी अध्ययन सामग्री विद्यार्थियों तक समय पर पहुंच पाती है? क्या विद्यार्थी इनकी उपलब्धता से संतुष्ट है? विद्यार्थियों को उपलब्ध होने वाली अध्ययन सामग्री की छपाई, गुणवत्ता के साथ उनकी विषय वस्तु व निर्देशन सम्बन्धी कठिनाई अनुभव करते हैं? दोनों ही प्रकार के मुक्त विद्यालयीन संस्थानों के विद्यार्थियों को अध्ययन केन्द्र पर परामर्श की सुविधा दी जाती है? इस संदर्भ में उनको दी जाने वाली सुविधा से वे किस हद तक संतुष्ट है? संपर्क कक्षाओं में उनकी समस्याओं का समाधान व मार्गदर्शन कितना औचित्यपूर्ण है? अधिगम व मूल्यांकन का दूसरा रूप दत्त कार्य है, जिसके द्वारा विद्यार्थी के तैयारी से संबंधित जानकारी व उनका मूल्यांकन करना भी आवश्यक है। NIOS व RSOS में अध्ययन करने वाले छात्र–छात्राओं की दत्त कार्य, मूल्यांकन प्रक्रिया, परीक्षा एवं परिणाम से सम्बद्ध समस्याएं कौनसी है?

राजस्थान में NIOS व RSOS में अध्ययनरत विद्यार्थी मुक्त शिक्षा के कौनसे पक्षों में समस्याओं का सामना करते हैं। मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान की लचीली सुविधा के बावजूद NIOS व RSOS की प्रवेश प्रक्रिया, प्रवेश शुल्क व्यवस्था, पाठ्यक्रम चयन अध्ययन सामग्री, अध्ययन माध्यम, अध्ययन केन्द्र, परामर्शदाताओं, सम्पर्क कक्षाएं, दत्त कार्य एवं मूल्यांकन प्रक्रिया में कतिपय भिन्नता दृष्टव्य है। अतः प्रश्न उठता है कि दोनों प्रकार की प्रणालियों के इन पक्षों में विद्यार्थी किस हद तक समस्या का सामना करते हैं? प्रश्न यह भी है कि राजस्थान

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

राज्य द्वारा संचालित मुक्त शिक्षा तथा राष्ट्रीय मुक्त शिक्षा संस्थान के विद्यार्थियों की समस्याओं में क्या अन्तर है? क्या दोनों संस्थानों में विद्यार्थी मुक्त शिक्षा के सभी पक्षों में समान रूप से कठिनाई का सामना कर रहे हैं? NIOS व RSOS के रूप में मुक्त विद्यालयी शिक्षा आधुनिक शिक्षा की तकनीक को विस्तार से पहुंचाने में समर्थ है, इसका लचीलापन और नवाचार अधिसंख्य लोगों के लिए उपयोगी है। कामकाजी लोगों के लिए भी यह शैक्षिक अवसर प्रदान करती है। यह प्रणाली परम्परागत विद्यालयों से कम खर्चीली है क्योंकि यह एक समय ने बहुत बड़ी संख्या को गुणात्मक शिक्षा देने में सक्षम है।

माध्यमिक शिक्षा तक विद्यार्थियों की पहुंच बढ़ाने में सार्थक प्रतीत हो रही मुक्त विद्यालय की भूमिका को स्वीकारते हुए इनमें अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्याओं को जानने के लिए अनुसंधात्री ने इसे शोध अध्ययन का क्षेत्र बनाया।

अध्ययन के उद्देश्य

राजस्थान की मुक्त विद्यालयीन शिक्षा के अग्रांकित पक्षों मे समस्याओं के प्रति विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करना–

- प्रवेश प्रक्रिया
- शुल्क व्यवस्था
- पाठ्यक्रम चयन
- अध्ययन सामग्री
- अध्ययन माध्यम
- अध्ययन केन्द्र
- परामर्शदाता
- सम्पर्क कक्षाएं
- दत्त कार्य
- मूल्यांकन प्रक्रिया

परिकल्पना

राजस्थान की मुक्त विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न पक्षों में समस्याओं के प्रति विद्यार्थियों का प्रत्यक्षीकरण भिन्न–भिन्न है।

तकनीकी शब्दों की परिभाषा

राजस्थान की मुक्त विद्यालयीन शिक्षा

राजस्थान राज्य में विद्यालयी स्तर पर मुक्त शिक्षा का संचालन राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान (NIOS) के साथ–साथ राजस्थान राज्य मुक्त विद्यालयी संस्थान (RSOS) द्वारा भी किया जा रहा है। RSOS एक स्वायत्तशासी संस्था है जो सम्पूर्ण राजस्थान राज्य में विद्यालयी (माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक) स्तर पर खुली शिक्षा की व्यवस्था करती है तथा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान (NIOS) सम्पूर्ण राष्ट्र में विद्यालयी स्तर पर खुली शिक्षा की व्यवस्था करती है।

NIOS सन् 2003 से कार्यरत है तथा राजस्थान राज्य मुक्त विद्यालय (RSOS) सत्र 2005 से स्वतंत्र संस्था के रूप में जयपुर में स्थित एवं कार्यरत है। प्रस्तुत अध्ययन में राजस्थान की मुक्त विद्यालयी शिक्षा से तात्पर्य RSOS व NIOS द्वारा राजस्थान राज्य में संचालित मुक्त विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था से है।

विद्यार्थियों की समस्याएँ

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की समस्या से तात्पर्य राज्य मुक्त विद्यालयी संस्थान तथा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के विभिन्न पक्षों–प्रवेश प्रक्रिया, शुल्क व्यवस्था, पाठ्यक्रम चयन, अध्ययन सामग्री, अध्ययन माध्यम, अध्ययन केन्द्र, परामर्शदाताओं, सम्पर्क कक्षाएं, दत्त कार्य, मूल्यांकन प्रक्रिया में विद्यार्थियों द्वारा अनुभव की गई कठिनाइयों या बाधाओं से है।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

विद्यार्थी प्रत्यक्षीकरण

अपने संवेदी अंगो द्वारा वातावरण से सूचनाओं को एकत्रित कर, अर्थ देने की प्रक्रिया प्रत्यक्षीकरण कहलाती है।

वे विद्यार्थी जो राजस्थान की मुक्त शिक्षा अर्थात् (NIOS व RSOS) की माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षा में अध्ययनरत हैं वे इस शिक्षा के विभिन्न पक्षों की विशेषताओं का लाभ लेते हुए सकारात्मक या नकारात्मक अनुभव प्राप्त कर रहे होंगे। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थी प्रत्यक्षीकरण से तात्पर्य राजस्थान की मुक्त शिक्षा के विभिन्न पक्षों में विद्यार्थियों द्वारा अनुभव की जाने वाली कठिनाईयों के प्रति सहमति एवं असहमति से है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

राजस्थान के जयपुर संभाग के सभी पांचों जिलों (जयपुर, सीकर, अलवर, दौसा, झुंझुनु) के राज्य मुक्त विद्यालय (RSOS) व राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान (NIOS) में माध्यमिक स्तर (कक्षा 10) व उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा 12) में अध्ययनरत विद्यार्थी प्रस्तुत शोध अध्ययन की जनसंख्या है।

न्यादर्श चयन हेतु मुक्त विद्यालयीन शिक्षा के राष्ट्रीय व राज्य मुक्त विद्यालयी संस्थानों (NIOS व RSOS) के जयपुर संभाग के पांच जिलों में विभिन्न अध्ययन केन्द्रों का चयन सौद्देश्य न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया। इनमें अध्ययनरत कुल 486 विद्यार्थियों का आकस्मिक न्यादर्शन विधि द्वारा चयन किया गया।

इस प्रकार संपूर्ण संभाग से कुल 486 विद्यार्थी प्रस्तुत शोध का न्यादर्श है। इसके साथ ही जयपुर संभाग के प्रत्येक जिले से 10 तथा कुल 50 विद्यार्थियों का चयन उपलब्धता के आधार पर साक्षात्कार हेतु किया गया हैं।

प्रदत्तों के स्त्रोत

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्तों की प्राप्ति प्राथमिक स्रोतों से प्राप्त की गई। अध्ययन हेतु प्रयुक्त प्राथमिक स्त्रोत निम्नलिखित है, जिनसे प्रदत्त प्राप्त किए गए–

1. राजस्थान की मुक्त विद्यालयी संस्थान (RSOS) के जयपुर संभाग के विभिन्न जिलों में अध्ययनरत विद्यार्थी।
2. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान (NIOS) के जयपुर संभाग के विभिन्न जिलों में अध्ययनरत विद्यार्थी।

प्रदत्तों की प्रकृति

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त प्रदत्तों की प्रकृति परिमाणात्मक एवं वर्णनात्मक है।

प्रदत्त संकलन हेतु उपकरण

- **प्रश्नावली**– शोध अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार विभिन्न स्त्रोतों से प्रदत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है। मुक्त विद्यालयीन शिक्षा संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्याएं जानने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।
- **साक्षात्कार अनुसूची**–मुक्त विद्यालयी संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों से साक्षात्कार हेतु स्वनिर्मित अर्द्धसंरचित साक्षात्कार अनूसूची का उपयोग किया गया।

शोध विधि

समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण विधि का चयन किया, क्योंकि अनुसंधान का उद्देश्य राजस्थान राज्य की मुक्त विद्यालयीन शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्या का अध्ययन करना है। मुक्त विद्यालयी शिक्षा में विद्यार्थी किन

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

–किन समस्याओं को महसूस करते हैं? इस वर्तमान स्थिति के अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि अधिक उपयुक्त प्रतीत हुई क्योंकि यह विधि अनुसंधानकर्त्री को उन वर्तमान तथ्यों से अवगत कराती है जो समस्या को अस्तित्व में रखते हैं।

विश्लेषण व्याख्या

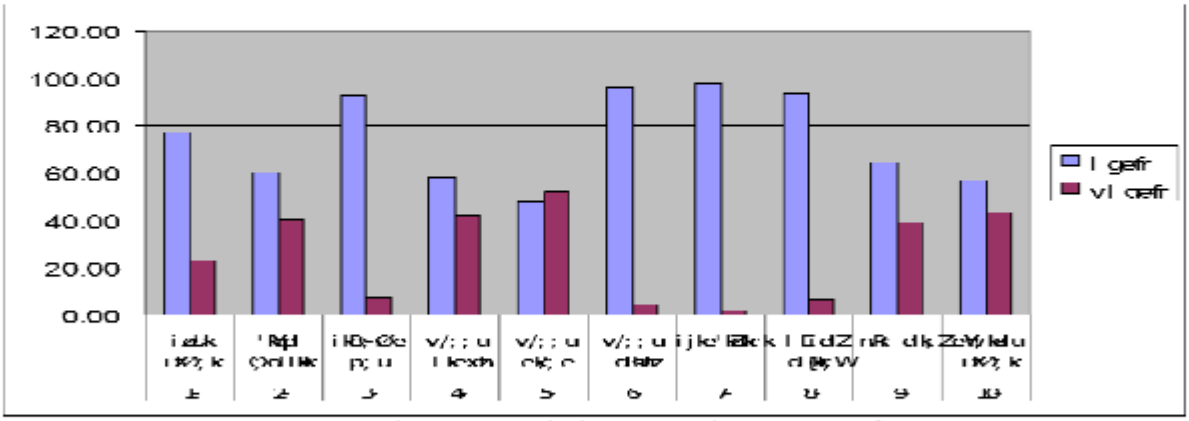

Figure 1.मुक्त विद्यालयीन शिक्षा के विभिन्न पक्षों में समस्या के प्रति विद्यार्थी प्रत्यक्षीकरण

इस प्रकार यह स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है कि मुक्त विद्यालयीन शिक्षा के पक्ष जैसे कि परामर्शदाता, अध्ययन केन्द्र सम्पर्क कक्षाएं, पाठ्यक्रम चयन आदि में क्रमशः 98.15 प्रतिशत, 95.89 प्रतिशत, 93.62 प्रतिशत तथा 92.80 प्रतिशत विद्यार्थियों ने समस्या को व्यक्त किया है। जबकि अन्य पक्ष–प्रवेश प्रक्रिया में 77.16 प्रतिशत, दत्त कार्य में 64. 20 प्रतिशत, शुल्क व्यवस्था में 59.88 प्रतिशत, अध्ययन सामग्री में 58.23 प्रतिशत, मूल्यांकन प्रक्रिया में 56.79 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा अपेक्षाकृत कम समस्या को महसूस किया गया है।

निष्कर्ष

शोध अध्ययन के निष्कर्ष परिकल्पनानुसार इस प्रकार प्रस्तुत किये गये हैं:

राजस्थान की मुक्त विद्यालयीन शिक्षा के विभिन्न पक्षों में समस्याओं के प्रति विद्यार्थियों का प्रत्यक्षीकरण भिन्न–भिन्न है।

मुक्त विद्यालयीन शिक्षा के विभिन्न पक्षों परामर्शदाता, अध्ययन केन्द्रों, संपर्क कक्षाएं, पाठ्यक्रम चयन संबंधी पक्षों में 90 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी समस्या का प्रत्यक्षीकरण करते हैं। स्पष्ट है कि मुक्त शिक्षा के विद्यार्थी इन पक्षों में सर्वाधिक समस्या को प्रत्यक्षीकृत करते हैं। 70 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी प्रवेश प्रक्रिया संबंधी पक्ष में जबकि शुल्क व्यवस्था, अध्ययन सामग्री, दत्त कार्य, मूल्यांकन प्रक्रिया में 50 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी समस्या का प्रत्यक्षीकरण करते हैं। 50 प्रतिशत से कम विद्यार्थी अध्ययन माध्यम पक्ष में (सबसे कम) समस्या को प्रत्यक्षीकृत करते हैं। अतः कहा जा सकता है कि राजस्थान की मुक्त शिक्षा में विद्यार्थी परामर्शदाता, अध्ययन केन्द्र, सम्पर्क कक्षाएं, पाठ्यक्रम चयन में सर्वाधिक विद्यार्थी प्रतिशत समस्या को व्यक्त कर रहे हैं तथा अध्ययन माध्यम में सबसे कम विद्यार्थी समस्या को प्रत्यक्षीकृत करते हैं।

इस प्रकार शोध की प्रथम परिकल्पना स्वीकृत होती है कि राजस्थान की मुक्त विद्यालयीन शिक्षा के विभिन्न पक्षों में समस्याओं के प्रति विद्यार्थियों का प्रत्यक्षीकरण भिन्न–भिन्न है।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

संभाव्य अन्य अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन के अतिरिक्त राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान एवं राज्य मुक्त विद्यालय के क्षेत्र में अपेक्षित अनेकविध अध्ययनों को आगामी शोध हेतु सम्मिलित किया जा सकता है।

1. राज्य की मुक्त विद्यालयीन शिक्षा (RSOS) में विद्यार्थी नामांकन का प्रवृत्यात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
2. मुक्त शिक्षा के विभिन्न शैक्षिक पाठ्यक्रमों में बालिका सहभागिता का अध्ययन किया जा सकता है।
3. भारत में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयीन शिक्षा संस्थान में अध्ययनरत बालिकाओं द्वारा प्रत्यक्षीकृत समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता हैं।
4. राष्ट्रीय व राज्य मुक्त विद्यालयीन शिक्षा संस्थान के अध्ययन केन्द्रों की कार्य प्रणाली का अध्ययन किया जा सकता है।
5. राजस्थान के सभी जिलों की मुक्त शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन।
6. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयीन शिक्षा संस्थान एवं राज्य मुक्त विद्यालय (SOS) के विद्यार्थियों की उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
7. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयीन शिक्षा संस्थान में भारत देश के संदर्भ में बालक एवं बालिकाओं के नामांकन का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
8. दो राज्यों की मुक्त विद्यालयीन शिक्षा (SOS) में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।

शैक्षिक निहितार्थ

नियोजकों व अधिकारी वर्ग

1. मुक्त शिक्षा के राष्ट्रीय व राज्य मुक्त विद्यालयों में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में विकसित माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को प्रवेश प्रक्रिया, शुल्क व्यवस्था, पाठ्यक्रम चुनाव, अध्ययन सामग्री वितरण व उपलब्धता, माध्यम इन सभी पक्षों से सम्बन्धित समस्याओं का निवारण कर मुक्त शिक्षा के विद्यार्थियों को लाभान्वित किया जा सकेगा।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा मुक्त शिक्षा के नियोजकों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया जा सकेगा कि राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में राजस्थान के प्रत्येक जिले में अध्ययन केन्द्रों की उपलब्धता अत्यल्प अथवा शून्य है। साथ ही जिन जिलों में अध्ययन केन्द्र उपलब्ध है वह सुविधा सम्पन्न नहीं है। अतः नियोजकों के द्वारा नीतियों का निर्माण करके ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में अधिकाधिक सुविधाओं से सुसज्जित अध्ययन केन्द्र खोलकर अधिक से अधिक विद्यार्थियों को खुली शिक्षा प्रणाली से लाभान्वित किया जा सकेगा।
3. उपर्युक्त शोध अध्ययन राष्ट्रीय व राज्य मुक्त विद्यालयों के अधिकारी व प्रशासकों के लिए भी महत्वपूर्ण है कि वह समाज के महत्वपूर्ण वर्गों की शिक्षा को अधिक रोजगारान्मुखी बनाने के लिए आज की मांग के अनुसार नये व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का निर्माण कर सकेंगे। जिससे अधिक से अधिक विभिन्न वंचित वर्गों के विद्यार्थियों को मुक्त शिक्षा की ओर आकृष्ट कर पायेंगे।

अभिभावक

समाज में बालिकाओं को शिक्षा क्षेत्र में आगे बढ़ाने व सही दिशा निर्धारित करने में इनकी भूमिका अहम होती है। अतः शोध अध्ययन के द्वारा तथा दैनिक समाचार–पत्रों, टी.वी., रेडियो व विभिन्न विज्ञापनों के माध्यम से अभिभावकों को बालिका शिक्षा व अन्य वर्गों

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

के प्रति शिक्षा की सजगता को बढ़ाने का प्रयास किया जा सकेगा।

शिक्षाविद

मुक्त शिक्षा के विभिन्न पक्षों में समस्याओं के हल व निष्कर्ष से मुक्त शिक्षा में नामांकन को बढ़ावा मिलेगा।

उपयोगी व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए मुक्त शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली समस्याओं से अवगत होकर उनमें सुधार के साथ प्रस्तुत किया जा सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

[1]. अग्रवाल, एस, (1999) ''राजस्थान राज्य में माध्यमिक स्तर पर खुली शिक्षा प्रणाली के प्रति अनुक्रियाशीलता का अध्ययन'' अप्रकाशित, लघु शोध प्रबन्ध शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ।

[2]. अग्रवाल, उमेश चन्द (2010) ''दूरस्थ प्रणाली के माध्यम से उच्च शिक्षा ऐतिहासिक लेखा–जोखा'' भारतीय आधुनिक शिक्षा वर्ष 31 अंक 1, एन.सी. ई.आर.टी. त्रपत्रिका–जुलाई 2010. पृ. 106–1।

[3]. बिश्नोई, एम. (2010) ''राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन'', शोध प्रबन्ध, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।

[4]. बहुगुणा, दिव्या (1999) ''दूरस्थ शिक्षा के अन्तर्गत विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आलोचनात्मक अध्ययन'', पीएच.डी. एजू., सी.सी. एस. यूनि. मेरठ।

[5]. हरिचन्दन, धनेश्वर (2012) ''समरी एण्ड कलक्लुजनस'', डिस्टेंस एजुकेशन एण्ड स्टूडेन्ट सपोर्ट सर्विसेज, दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन्स. पृ. 112।

[6]. मदान, आदर्श (1994) ''ऑपन स्कूल (माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के दूरस्थ शिक्षा विभाग द्वारा संचालित) इन द राजस्थान बोर्ड : जनरल ऑफ एज्यूकेशन'' वाल्यूम 30, अंक 1, जनवरी–मार्च 1994।

[7]. मोहन्ती, जगन्नाथ (2001) ''स्टडीज इन डिस्टेंस एजूकेशन'', दीप एण्ड पब्लिकेशन्स, प्रा.लि., न्यू देहली।

[8]. महरिया, दयाराम (2013), ''सर्व सुलभ सहज शिक्षा राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल'' शिविरा पत्रिका माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर वर्ष 54 अंक 2. अगस्त, 2013 पृ. 22।

[9]. पतंजलि, प्रेम चन्द, (2005) ''ओपन लर्निंग इन इण्डिया : इश्यूज एण्ड ओपरच्यूनीटीज.'' एन साइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशनल डवलपमेंट इन इण्डिया, वाल्यूम 5। श्री पब्लिर्श एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स न्यू दिल्ली, पृ. 228।

[10]. पाण्ड़ा, संतोष, (1999) ''ओपन एण्ड डिस्टेंस एजुकेशन पॉलिसी जी, प्रेक्टिसेस एण्ड क्वालिटी कन्सर्नस'' अरावली बुक्स इंटरनेशनल. न्यू दिल्ली. पृ. 25, 43,, 205–377।

[11]. पाण्ड़ा. एस.के. शर्मा आर.सी. सत्यनारायण. पी. (1996) ''ओपन एण्ड डिस्टेंस एजुकेशन रिसर्च–एनेलिसिस एण्ड एनोटेशन'' पब्लिशड़ बॉय आइडिया, वारंगल पृ. 15–22।

[12]. विवरणिका (2012–13): राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल जयपुर, राजस्थान राज्य पुस्तक मण्डल परिसर 2.2 ए, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर।

[13]. Open schooling in 21st Century www.col.org/ sit (common wealth of leaving chap. 7 M.C. Pant.) (Retrieved on Mar. 11, 2012).

[14]. www.rajeduboard.nic.in (Retrieved on March 3, 2011).

[15]. http://www.rsos.org (Retrieved on Jan., 2011-2012).

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

[16]. www.nios.ac.in. General information about NIOS : Diagramatic Presentation page 1-12/ Pdf. (Retrieved on Jan., 21, 2011).
[17]. Comosa Journal Jan-Jun 2011 pdf. why NIOS must succed- special report educational world Dec. 2010. P. 70-71, 75 by Summiya Yasmeen&Swati Roy, Report. (Retrieved on March 10, 2012).
[18]. wikieducationorg. Anita Priyadarshini pdf (Using technology for strengthening open schooling. A study of the NI-On project of NIOS Page 1-5) (Retrieved on Jan. 10, 2013).

 © Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.